हमारे आदर्श कौन? पुराणों के कृष्ण या - महाभारत के

।। ओ३म् ।।

# जन्माष्टमी पर्व

वक्ता :- श्री. पं. ओम्प्रकाशजी खतौलीवाले शास्त्रार्थ महारथी

प्रवचन स्थल :- आर्य समाज चेम्बूर , मुम्बई

आर्य जगत् के प्रकाण्ड विद्वान एवं शास्त्रार्थ महारथी पं. ओम्प्रकाश जी खतौलीवालों के दर्शन तो मैने नहीं किये लेकिन उनका नाम तो बहुत सुना था । जन्माष्टमी पर्व पर आर्य समाज चेम्बूर में जो प्रवचन दिया था उसका ओडियो कॅसेट कई वर्षो पूर्व श्री प्रभु भाई धनजी वेलाणी द्वारा मुझे सुनने के लिए दिया गया जिसे मै ने कई बार सुना जिसमें योगीराज श्री कृष्ण का वास्तविक इतिहास, पर्व का महत्व तथा उन पर लगाए गए लाँछनो का सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले दुष्टप्रभाव का विस्तृत वर्णन किया गया है । आर्य समाजियों को नास्तिक मानने वालों को भी मुहतोड़ जवाब दिया है । आर्य समाज घाटकोपर के कुछ आर्य सज्जनों की इच्छा थी कि इसे लेख बद्ध कर के पुस्तक के रुप में प्रकाशित किया जाय ताकि जन जन तक इस पर्व का वास्तविक रूप पहुंच सके और योगीराज श्री कृष्ण के प्रति लोगों की जो मिथ्या धारणाएं है उनका निवारण हो सके इसी शुभ भावना के साथ इस प्रवचन को लेख बद्ध कर रहा हूँ। इसमे मेरी अन्य मतावलंबियों की भावनाओं को, आहत करने का लेश मात्र भी मनसा नही है । "अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ" अप्रिय और हितकारी वचन बोलने वाले और सुनने वाले लोग दुर्लभ है । वक्ता ने अपने वक्तव्यमें इस सूक्ति को चरितार्थ किया है। आप सब सुधी पाठक वृन्द है स्वयं भी आद्योपांत पढें और अन्य इष्ट मित्रों को भी पढने की प्रेरणा प्रदान करें । इस कार्य को सुचारु रूप से संपादित करने वाले सभी सहयोगियों को शतशः धन्यवाद !

संकलन कर्ता
पं. धर्म धर आर्य सिद्धान्ताचार्य
उप प्रधान आर्य पुरोहित सभा मुंबई

Scanned with CamScanner

ओ३म् यां मेधां देव गणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधा विनं कुरु स्वाहा ।। वेद

ओ३म् हिरणमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
यो सावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् ।। ईशोपनिषद

ओ३म् असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्माऽमृतं गमय ।।

ओ३म् योऽन्त प्रविष्य मम वाचं इमां प्रसुप्तां संजीव यस्य अखिल शक्ति धर स्वाधाम्नां अन्यांश्च हस्त चरण श्रवण प्रवादी प्राणाय नमो भगवते परमेश्वराय ।।

उपस्थित बहनों और भाईओं! वो देश अत्यंत सौभाग्यशाली होता है। जिसके पास उसके प्राचीन महापुरुषों का इतिहास सुरक्षित मिल जाय। संसार में यह गौरव और प्रसन्नता की बात है कि वह आर्यावर्त देश जिसे भारत या हिन्दुस्तान कहा जाता है । इस विषय में सबसे सौभाग्यशाली देश है । संसार के जिस देश में उसके प्राचीन और प्राचीनतम लोगों का इतिहास सुरक्षित नही मिलता है उनकी सभ्यता संस्कृति और विचार धारा का विकास वर्षों के हिसाब से बहुत थोडे काल से प्रारंभ होता है । लेकिन जिन महापुरुषों के इस देश मे मौजूद हुए लाखों करोड़ों वर्ष होगए हैं। उन महान पुरुषों की जीवन गाथाएं इस सौभाग्यशाली देश में परम्पराओं से प्रवाहित होती हुई एक घर से दूसरे घरों में या पीढ़ी दर पीढी आज भी चलती हुई नजर आती है । इतिहास की ये जो सम्पत्ति है । जैसा मैने कहा कि यह अत्यंत सौभाग्य की बात होती है । जिसे प्राचीन पुरुषों का इतिहास सुरक्षित मिले वो इस दृष्टिसे भी होती है कि हम लोग जब

Scanned with CamScanner

खेल खेलते थे तो लोंग जम्प का खेल होता था अखाड़े पर हम देखते थे कि एक स्प्रींगदार तख्ता सा लगा रहता था जम्प के लिये, जो लड़के जम्प के कायदे की जानकारी नहीं रखते थे वे उसपर पैर रखकर जम्प लेते थे और चार पाँच कदम पर गिरजाते थे। लेकिन जो लोग जम्प के नियमों को जानते थे वे लौटकर १०-१५ या २० कदम पीछे जाते थे और वहां से तेजी के साथ आकर वेग लेकर जब पौइन्ट से जम्प लेते थे तो अखाड़े की सीमा को पार कर जाते थे ठीक यही उसूल किन्ही जाति व राष्ट्रोन्नति में काम करता है । जो जातियाँ अपने वर्तमान से अपने भविष्य के निर्माण में लगती है । वह चार कदम पर आकर गिरजाती है दुनिया की कौमें (जातियाँ) उनकों रोन्दकर आगे निकल जाती है । लेकिन जिन लोगों के पास अपने देश का प्राचीन इतिहास होता है तो वह केवल वर्तमान से अपने भविष्य का निर्माण नही करती जाती बल्कि वे लौटकर हजारों लाखों साल पहले के इतिहास के पन्नों पर जाती है और वहाँसे महान पुरुषों के जीवन से (मोमेन्टम) वेग और शक्ति लेकर जब अपने भविष्य के निर्माण में दौड़ती है तो दुनिया की कौमों को रोन्दती हुई आगे निकल जाती है । जहाँ इस देश का सौभाग्य है कि यहां वो ऐतिहासिक सामग्री, परम्परा से एक घर से दूसरे घर में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में फैलती ~~गई~~ चली गयी। वहाँ हम अपने को बहुत सौभाग्यशाली मानते हैं कि अपने प्राचीन महापुरुषों का इतिहास आज भी सुरक्षित मिलता है लेकिन, बद किस्मती इस राष्ट्र की यह रही है कि इतिहास का लाभ हम जो उठा सकते थे उससे वंचित रहे हैं और वंचित इसलिए रहे कि पहली गलती तो हमने यह की कि जो हमारे राष्ट्र के राष्ट्र पुरुष थे जो हमारे देश के इतिहास के

Scanned with CamScanner

हिस्टोरिकल हीरो कह सकते हैं हम उन व्यक्तियों को जो ऐतिहासिक व्यक्ति होते हुए हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकते थे उन के जीवन की जो बाते है वो अपने जीवन (आईडियल) का आदर्श बनाकर आगे बढ़ सकते थे वो हमारी दृष्टि में, हमारी भावनाओ में, वो पुरुष न रह कर भगवान बनगए । अब जब हम लम्बे इतिहास के पिछले पन्नो से जब किसी महान पुरुषों का जीवन सामने लाना चाहते हैं । मान लीजिए रामायण का इतिहास है इस का प्रत्येक पात्र अपनी जगह एक आदर्श है पिता को कैसा होना चाहिये ? माता कैसी होनी चाहिये ? कैसी नहीं होनी चाहिये ? पिता और माता में कौन से अवगुण नहीं होने चाहिये ? पुत्र कैसा होना चाहिये भाई-भाई में कैसे प्रेम और परस्पर सौहार्द्र रहना चाहिये । पत्नी को कष्ट में भी सीता के समान अपने पति का साथ देना चाहिये । एक जीवन ही नहीं है जिसको कहा जा सके कि हमारे लिए एक प्रकार से प्रकाशस्तम्भ का काम न|कर रहा हो, हमारे लिये कोई न कोई आदर्श उपस्थित न कर रहा हो। तो आपको पता चला कि वो महापुरुषों के जीवन जब हम कथाओं में सुनते हैं । अगर वो पुरुषों के जीवन रह जाएं हमारे जैसे व्यक्तियों के जीवन की घटनाएं है राम इस में पिता को आज्ञा पालन करने वाले थे भाईयों भाईयों में लक्ष्मण भरत और राम के आपस कितना प्रेम सौहार्द और आकर्षण था कितनी त्याग की भावना थी ये हम रोजाना सुनते है लेकिन अगर आपके लड़के को कोई कहे कि आपको राम जैसा होना चाहिये तो लड़का एक मिनट में पल्ला झाड़ कर कह देगा कि राम तो भगवान थे । मैं तो (कोमन मैन) साधारण मनुष्य हूँ मेरे बस का थोड़ी है इतना सब होना उसके लिए वो जीवन का आदर्श नही रहजाता है ।

Scanned with CamScanner

इसको कहना चाहिये कि ये भगवान की शक्ति थी जो ये लीलाए कर रही थी वो मेरे लिए अनुकरणीय और आदर्श नहीं है । इस प्रकार की भावनाएँ उस का परिणाम निकला है कि हमारे वे इतिहास के पन्ने जो हमारे जीवन के अन्दर हमें वेग और आदर्श के रूप मे शक्ति या स्रोत कह सकते हैं जो हमें मिले हुए थे वो केवल हमारी पूजा और भक्ति का साधनमात्र बनकर रह गए ।

जिन योगीराज श्री कृष्ण का जन्मदिन मना रहे है वो संसार का एक ऐसा अनुपम और आदर्श व्यक्ति है । जिसको कहना चाहिए व्यक्तित्व है कि जो अपनी जगह पर अद्वितीय है उनके गुणों को जब मैं देखता हूँ महाभारत को पढ़ते हुए । (अभी हमारे भाई जयदेव जी कह रहे थे कि लोग हमें कहते है कि आर्य समाजी बड़ा नास्तिक है ।) न राम को माने न कृष्ण को माने राम कृष्ण तो छोड़िये हमे लोग नास्तिक भी समझते है । मेरे एक मित्र थे जो कहीं स्कूल बोर्ड में इन्सपेक्टर थे। एक दूसरे मित्र थे जो म्यूनसिपेलिटी में चेअरमैन थे उनका नाम भी ओम्प्रकाश ही था। उनका कोई काम होगा चेअरमैन से तो किसी ने कहा कि शास्त्री जी के पास चलेंजाओ वे उनके लंगोटिया यारों में से है कहना मान जाएगे मैं एक जगह बैठा हुआ था वैद्यजी की दुकान पर वे वही आगए और आकर के नमस्ते की मैने कहा कहिये क्या काम है । वे कहने लगे जी मुझे बाबू ओम्प्रकाशजी से काम है सुना है आपके मित्र है । हाँ सो तो है काम क्या है मुझे बताइये मैंनें उनकी फाईल देखी और उसको पढ़ने के बाद कहा कि काम ठीक है । काम कायदे कें अनुसार हो जाना चाहिये । अगर भगवान ने चाहा तो हो जाएगा । मै कह कर देखूंगा मैने जो ये कहा कि भगवान ने चाहा तो हो जाएगा, तो इन्सेपेक्टर पढालिखा

Scanned with CamScanner

मैं दवाई बनवा रहा था वैद्यजी से, मुझे क्या कहता है ? कि शास्त्रीजी आप आर्य समाजी लोग भी ईश्वर को मानते है क्या ? मैं क्रोध भी, अजीब सी हँसी भी, मैं बड़ा परेशान कि यह पढ़ा लिखा आदमी, ये मूर्ख आदमी ये कहता है क्या आर्य समाजी लोग भी ईश्वर को मानते है ? मुझे थोड़ी झुंझलाहट सी हुई, मैने उसे कहा नहीं हम लोग तो दरगाह में जाते हैं चिस्ती साहब की दरगाहें में मत्था टेकने, हम कहाँ कोई ईश्वर को मानते है मैने उसको एक लब्ज (शब्द) कहा था जिससे उसकी अकल दुरुस्त हो गयी मैने कहा तुम (पौरणिक) लोग जो हो वो ईश्वर को मानते तो जरुर हो पर जानते नही हो और हम आर्य समाजी लोग ईश्वर को मानते ही नही बल्कि जानते भी हैं हमारे बारे में इस तरह गलतफैमियाँ फैलाई गयी है कि हमें दूसरे लोग नास्तिकों की श्रेणी में गिनते हैं। वो समझते हैं कि हम ईश्वर को नही मानते अब इतनी लम्बी चौड़ी तो प्रार्थना कराई भाई साहब ने बड़ी करुणा रस से आप्लावित थी, लोग रो उठे, मेरी भी आखों में आँसु आ गए हालांकि मैं ये कहा करता हूँ कि (हँसते हुए) एप्लीकेशन बहुत संक्षिप्त होनी चाहिये। इतनी लम्बी अर्जी ठीक नहीं रहती लेकिन फिर भी बड़ी भावुकता से करुणा रस से आप्लवित ईश्वर के दरबार में मां कहकर पुकार रहे थे ये नास्तिकों का काम है ? नास्तिक कर सकेगें इस काम को ? लेकिन हम कहाँ-कहाँ तक इन भ्रांतियों को मिटाएं । बड़ी मुसीबत हो गयी है कोई कहता है ईश्वर को नहीं मानते, कोई कहता है देवी देवता को नहीं मानते, कोई कहता है न राम को माने न कृष्ण को माने जब मुझे कोई कहता है तो मैं कहता हूँ चलो आर्य समाज मंदिर में वहाँ ले जाकर सार्वदेशिक सभाकी जो पर्वो की सूची है वह दिखाता हूँ देखो

Scanned with CamScan

रामनवमी हमारे यहां पर्वों में है, जन्माष्टमी हमारे यहाँ पर्वों में है कौन कहता है ? कि हम राम और कृष्ण को नहीं मानते हाँ यह फर्क जरुर है कि तुम्हारे दृष्टिकोण से नही मानते, हमारे और तुम्हारे दृष्टि कोण में अन्तर है आप रामायण को भक्ति का एक ग्रंथ समझते है, आप गीता को एक मत्था टेकने का ग्रन्थ, समझकर उस पर छीटें दे दिये चन्दन लगा दिया चावल चढ़ा दिये मत्था टेक लिया और पूजा हो गयी, हमारा दृष्टि कोण यह है कि महापुरुष राष्ट्र के हैं और हमारी आगे की जो पीढ़ियाँ है उनके लिए आदर्श है उनको जीवन का अनुकरण करना चाहिए, यही महान् पुरुषों की भक्ति है किसी की तस्वीर लेकर उस पर माथा टेकना, फूल पताशे चढ़ाना यह उसकी पूजा नही है बल्कि किसी भी महान पुरुष के चित्र से चरित्र की शिक्षा लेना उसके जीवन को, अपने जीवन में ढालने का प्रयत्न करना अपने को उसके गुणों में कनर्वट करना और उसके अनुसार आचरण करना यह हमारे यहाँ पूजा भक्ति का नाम है । आज जिस महापुरुष का हम जन्म दिवस मनाने जा रहे है । मैने आपसे पहले कहा कि वो इस देश की महान विभूति थे बल्कि संसार की महान विभूति है और महर्षि दयानन्द ने उनके बारे में मै समझता हुँ कि संसार में कोई भी इतना कीमती लब्ज श्री कृष्ण जी के लिए नही लिख सका जो महर्षि दयानन्द ने लिखे हैं । उन्होने लिखा है कि ''महाभारत पढ़ने से ज्ञात होता है कि श्री कृष्ण जी के जीवन में जन्म से लेकर मरण पर्यंत कोई बुरा काम किया हो ऐसा नजर नही आता'' आगे लिखते है कि पिछले पाँच हजार सालों से मैंने उन जैसा महान पुरुष संसार मे पैदा हुआ नही देखा, फिर दुख के साथ कहते है लेकिन ''बुरा हो उस भागवत लिखने वाले का जिसने इतने

Scanned with CamScan

चरित्रवान व्यक्ति को भी दुराचारी और दुष्चरित्र साबित कर दिया'' यह हमारा दृष्टिकोण है । कृष्ण जी के बारे में एक ऐसा व्यक्ति जिसने जन्म से लेकर मरण पर्यंत कोई बुरा कर्म नही किया ये कृष्ण जी का जीवन हमको महाभारत में पढ़ने को मिलता है, मुझे आज अगर संक्षेप में कहने को कहें तो आज श्रीकृष्ण की दो लाईफ है दो जीवन है जो हमारे यहाँ उपलब्ध है । एक वो है जिसका वर्णन महाभारत में व्यास जी ने किया है और एक वो वर्णन है श्री कृष्ण के जीवन का जो पुराणों में वर्णित है । हम निःसंदेह और निस्संकोच कह सकते हैं । कि हमें, महाभारत का जो कृष्ण है । उसको हम अत्यंत श्रद्धा और अनुकरणीय समझते हैं श्रद्धा का पात्र समझते हैं । हमारे जो मतभेद हैं वो जिसका हम खण्डन करते हैं पुराण में वर्णित कृष्ण है । हम पुराण में वर्णित कृष्ण को अपने जीवन का आदर्श नहीं बना सकते आप तुलना करें थोडा सा योगीराज कृष्ण अर्जुन को उपदेश करते हैं - ध्यायतो विषयां पुंसः संगस्तेषूपजायते ।

संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ।।

क्रोधात् भवति संमोहः सम्मोहात् स्मृति विभ्रमः ।

स्मृति भ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणशयति ।। गीता ।। २/६३

इंद्रियों के द्वारा विषयों का ध्यान करने मात्र से जो है वो मनुष्य के विनाश की पहली सीढ़ी है: जो विषयों के ध्यान को मृत्यु की पहली सीढ़ी मानने वाला कृष्ण है जो गीता में यह उपदेश करते हैं ।

यह गीता स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है, महाभारत से १८ अध्याय अलग से छपा करके 'भगवत गीता' नाम दे दिया गया है यह महाभारत का ही हिस्सा है । तो उसमें सवाल उठाया अर्जुन ने की स्थितप्रज्ञ का क्या लक्षण है ? जिसकी प्रज्ञा (बुद्धि) स्थित हो जाती है । उसके क्या लक्षण है । जवाब देते हुवे योगीराज श्रीकृष्ण कहते हैं कि -

Scanned with CamScanner

प्रजहाति यथा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मनातुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।। गीता २/५५

मन में भी आने वाले जो इन्द्रियों के विषय है । विषय के जो साधारण काम है लेकिन जब तक ऐन्द्रिक (ऑपजेक्ट) विषय का मनसे चिन्तन खत्मकर देना, यह कठिन काम है। इसी लिए योगी राज कृष्ण ने एक जगह और भी अर्जुन से कहा था कि -

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य्य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान् विमूढ़ात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ।। ३/६

हे अर्जुन जो अपनी आँख, नाक, कान को तो संयम (कंट्रोल) करलेता है लेकिन जब तक मन से विषयों का चिन्तन करता रहता है यह तो धोखा है । अपने आपको धोखा देता है । विमूढात्मा जो अपने आपको बेवकूफ बना रहा है मिथ्याचारस्य उच्चते पाखण्ड कहा जा सकता है । इसके सिवा कुछ नही, तो समझे! आप मेरी बात को गीता में महाभारत का पात्र जो कृष्ण है वो विषयों से उपरति का उपदेश कर रहा है अर्जुन को और स्थित प्रज्ञ की भी यही भावना बताई कि जब वह अपनी कामनाओं को मन से भी पृथक कर देता है । तब जाकर के स्थित भूमि कहलाता है। एक ऐसा पात्र महाभरत का जो त्याग को और समझिये कि संयम को, ब्रह्मचर्य को समझिये या इन्द्रियों को नियन्त्रण को एक आदर्श उपस्थित करता हो और बताता हो कि मनुष्य के जीवन का उद्धार का साधन है तथा विषयों का ध्यान मनुष्य के विनाश का कारण है जब हम पुराण में पढ़ते है तो हैरान हो जाना पढ़ता है मुझे आप क्षमा करें मै कड़वा बोलने का आदी नहीं हूँ लेकिन क्या कहूँ उस शब्द को करतूत या कर्म शायद दुनिया की कोई कौम नहीं होगी जिसने अपने महापुरूष को इतना

Scanned with CamScanner

लांछित किया हो जितना इस बदकिस्मत हिंदू कौम ने किया है कौन सा कुकर्म है ? जो कृष्ण के साथ नहीं जोड़ा गया है । चोर उसे बताया गया, चोरज़ार शिखामणि, चोर जार शिखामणिके क्या अर्थ होते है ! चोर और बदमाशो का सरदार इसका हिंन्दी मे अनुवाद यही होगा और दूसरा नहीं जो हम ने कृष्ण के लिए कहा और किस आधारपर कहा जो वर्णन महाभारत में कृष्ण के लिए किया उधर से तो हम ने आखें मीच ली और जो पुराणों में कृष्ण का जीवन लिखा था उसकी घर घर में हमने चर्चा करी और रास होने लगी रास क्या है ? लडके लड़कियाँ डंडे हाथ मे लेकर नाचते है कृष्ण का रूप स्त्री का बना लिया जाता है और कितना भयंकर उस का परिणाम निकला है कौम पर कभी आपने सोचा है? चोरजार शिखामणि क्यों कहा? महाभारत को छोड कर पुराणों को पढ़कर देखिये मै अगर उसका वर्णन करने लग जाऊँ तो आप दुखी हो जायेंगें मैं खुद दुखी हो जाऊंगा । मुझे बड़ा दुख होता है जब मै एक महान पुरूष के उस जीवन को जो वास्तविक नहीं है लेकिन हमारे दिमागों पर उसका असर परम्परा से चला आ रहा है और एक बात कह दूं बहुत बार ऐसा भी होता है बहुत सारे वो लोग हमारे यहां आजाते है जिनकी श्रद्धा और भक्ति में वे कीटाणु हैं और जब उसका खंडन करते है तो वे कहते है कि साहब यहां खंडन होता है। मै उन्हें कहना चाहता हूं हमारा इरादा किसी का खंडन करना नही होता जब पुराना बर्तन बहुत समय से पड़ा हुआ हो उसमें जंग लग जाये तो उसे साफ करने बैठते हैं तो जंग तो निकलता है । लेकिन कभी कभी घसीटा बर्तन पर भी लग जाता है हमारा इरादा बर्तन पर घसीटा करने का नहीं होता है संस्कारों को साफ करना है जो परम्परा से हमारे भीतर घर में प्रवेश

कर गए हैं । अब आप देखेंगे महाभारत में मुझे मालूम नहीं है कि ये बात महाभारत में तो है नही इसका जिक्र नही है । द्रोपदी का चीर बढाया ये घटना कल्पित है लेकिन फिर भी कम से कम एक बात तो निकलकर आती है और ये सत्य भी है तो कृष्ण ने द्रोपदी को निर्वस्त्र नहीं होने दिया राजदरबार में और उसकी लाज रखली यही तो आदर्श है उस कथा का लेकिन इस के विपरीत जब पुराण को पढ़ के देखता हूँ तो एक नजारा अलग ही नजर आता है और उसका असर साहित्यिक लोगों पर ही नही हुआ बल्की दार्शनिक (फिलोस्पर) लोग भी उस अन्ध परम्परा में बह गए । जो लोग विद्वान है वो जानते है कि संस्कृत में फिलासफी (दर्शन) का एक ग्रंथ है । नव्यन्याय का कारिकावली उसमें 'मुक्तावली' कामेन्ट्री (भाष्य) है उसमें भी बडी कामेंन्ट्रियाँ हुई है वो दर्शन का बहुत प्रसिद्ध ग्रन्थ है उसका जो मंगला चरण है -

नूतन जल धर रुचये गोप वधूटी दुकूल चौराय ।
तस्मै कृष्णाय नमः संसार मही बीजाय।। यह कोई साहित्यिक व्यक्ति मंगलाचरण नहीं कर रहा है यह एक फिलोस्फर (दार्शनिक) कर रहा है वो तार्किक होना चाहिये, बुद्धि से काम लेने वाला होना चाहिये, आगे लिखता है नूतन जलधर रुचये श्री कृष्ण की स्तुति कर रहा है नये बादलों के समान जिसका रंग है । ग्वालों की जो नई नई बहुएँ है उसे वधूटी कहते हैं उनके वस्त्रों को चुराने (हरने) वाले उस कृष्ण को नमस्कार है जो संसार रूपी वृक्ष का उपादान कारण है । ये दार्शनिक का मंगलाचरण है कहाँ से लिया यह पुराण में से लिया भागवत पुराण के दसवे स्कन्ध को पढ़ कर देखो आप, उसमें लिखा है । कथा है कोई त्यौहार दिन था उस दिन कुछ ग्वालिनें नग्न होकर

Scanned with CamScanner

नदी में स्नान कर रही थी और कृष्ण ने देखा कि औरते नंगी नहा रही है कपडे किनारे पर रखे हुए है तो कृष्ण जी ने सब के कपडे समेट लिए एक एक शब्द का मै जिम्मेदार हूँ, और अभी मै हूँ यहाँ, अगर किसी को एतराज हो तो मैं यहीं हूँ १०-१५ रोज, अक्षरशः पुराण में दिखाउंगा जो में बोल रहा हूँ। तब कपडे लेकर कदम के पेड पर चढ़ गए और दुबक गए । उन बिचारी ग्वालिनियों को पता ही नही कि हमारे कपड़े उठा के लेगए है। एकान्त समझ कर के नहा कर पानी में से नंगी निकली और अपने कपड़ों की तरफ को गई जहाँ रखे हुऐ थे । वहाँ जाकर देखा तो कपडे गायब! अब वो चारों तरफ देखती है कपडे कहां गए तब कृष्ण जी महाराज ने वृक्ष की शाखा पर से बंसरी बजाई तब उन औरतों को पता चला कि हमारे कपडे कृष्ण ने चुराए है तब शर्म के मारे भाग कर नदी में जाकर घुस गयी और अपने अंगो को पानी में डूबा दिया, शर्म के मारे और उन्होंने कृष्ण से प्रार्थना करी श्लोक है वहाँ हे कृष्ण हमारे कपड़े देदे तब कृष्ण कहते है कि पानी से बाहर निकल करके प्रार्थना करो, मतलब क्या है! आप समझिये एक वो व्यक्ति जिसने जन्म से मरण पर्यन्त कोई बुरा कर्म नही किया ये तो ऋषि दयानन्द कह रहे हैं और जो विषयो के चिन्तन को भी मृत्यु का कारण बताता है ऐन्द्रिक औप्जेक्ट से कटआफ होने को स्थित प्रज्ञ होने का साधन बताता है और दूसरी तरफ पुराण का कृष्ण, तो लिखा लिखने वाले ने कि वो कहते हैं पानी से बाहर निकल कर प्रार्थना करो अब कपड़े वहाँ उनके पास हैं करें क्या बेचारी? विवश होकर पानी से बाहर आती है। भागवत वाला लिखता है। कि उन्होंने अपने गुप्तांगो को हाथों से ढ़क लिया फिर शर्म के मारे कहा अब तो देदे कृष्ण हमारे कपड़े, तो वह कहता है कि यों नही अमुक

तिथि के दिन नदी में नंगे नहा कर पानी भ्रष्ट किया है। इस लिए प्रायश्चित में हाथ जोड़ कर प्रार्थना करो, कितना घृणित कर्म है अगर बदकिस्मत कौम, जरा भी समझती होती तो कम से कम ये पुराणों मे लिख भी दिया था तो पढ़े लिखे लोग समझते या नही समझते लेकिन बाजारों के भीतर उनकी तस्वीरें बन गई है औरतें नहा कर नंगी निकली है और कपड़े माँग रही है और कदम के पेड पर बैठा हुआ कृष्ण ये तस्वीर लोगों के घरों मे टंगी हुई है। मैने बनारस के बाजारों में बिकती देखी है पहले मै साथ लेकर चलता था बताता ये तस्वीर है कृष्ण की पौराणिको ने छापी है। मैं आपसे कह रहा हूँ हमारे और उनके दृष्टि कोण में अन्तर है इसका क्या किया जाय? क्यों मनातें हैं रामनवमी? क्यों मनाते हैं जहन्माष्टमी? क्यों बुद्ध जयन्ती मनायी जाती है? क्यों दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया जाता है? क्यों? केवल मात्र औपचारिकता (फार्मलेटी) है या ऐसा करने पर हम कोई पुण्य के पात्र बन जाएंगे, ये सब दृष्टिकोण नहीं है एक ही दृष्टि कोण है कि हमारी आने वाली नई पीढियों को उनके जीवन, प्रेरणा के स्रोत बनकर आए उनका आदर्श जीवन बन जाऐ और उसकी कापी (अनुकरण) करके अपने जीवन को समुन्नत बनाएं जैसा मैनें कहा लोंगजम्प के अनुसार हम उनके जीवन से प्रेरणा लेकर, शक्ति लेकर आगे की तरफ को बढ़ जाए। क्या कोई चाहेगा? कि उनका लड़का इन कामों को करे जो कृष्ण ने किये जिन के साथ अटेचमेंट है पुराणों में मुझे आप क्षमा करें आज कल की इन्डिन पेनल कोड की कई दफाएँ (धाराएं) लग जाए, सजा होजाय और वो जा रही है दही बेचने को, मटकी फोड़दी जनाब ने उनसे दही छीनकर खा गये है चोर, जार शिरोमणि हो ही गए और कहते है

Scanned with CamScan

१६००० रानिया थी इसको क्या कहें जब हमने आक्षेप किया तो माधवाचार्य ने जानते है ? क्या कहा उन्होंने अपनी किताब ''क्यों'' में सभी कुछ खो दिया, वे लिखते हैं ये नारिया नहीं है नाडियाँ है शरीर के अन्दर की नाडियाँ है यह बताया और कहने लगे राधा कौन थी ? कृष्ण की रोज चिल्लाते है राधे श्याम राधावल्लभ राधावल्लभ का क्या सैंस है राधा वल्लभ के इसके मायने भी जानते हो ? कौन है राधारमण राधा के साथ रम्मण कर ने करनेवाला राधा रमण राधा वल्लभ का मतलब होता है, क्षमा चाहता हूँ कुछ शब्द ऐसे है संस्कृत व्याकरण जानने की वजह से उसकी व्यंजना को जानता हूँ वल्लभ पति को नहीं कहा जाता नाजायज प्रेमी, प्यारकरने वाला, राधा वल्लभ का सेंस यह है संस्कृत व्याकरण के लिहाज से, अच्छा राधा लगती क्या थी चलो प्यार कर लिया होगा। रिश्ते में होगी कुछ, कहीं नहीं पत्ता चलता कि राधा है कौन है ? ब्रह्मवैवर्त पुराण पढ़ा तो वहाँ पता लगा, वहाँ लिखा है

यशोदा कृष्ण माता, रायणस्तस्य सहोदरः।
जात्यावैश्य तुविज्ञेया सम्बन्धात् कृष्ण मातुलः ।।

यशोदा जो श्रीकृष्ण की मां थी रायण उसका सगाभाई, जाति से वैश्य और सम्बन्ध से कृष्ण का मामा था उसके साथ १२ वर्ष की उम्र में राधा की शादी हुई थी वो कृष्ण की कौन लगी ? मामी लगी, अब कहो राधा वल्लभ राधारमण। यानि कुछ सोचते नहीं, हम कहते हैं तो कहते है खंडन करते है । हम करें क्या ? ये उत्तर भारत में कह दीजिये तो पीटेंगे पकड कर के राधा कृष्ण की मामी लगी कहते हैं की कृष्ण का ब्याह हुआ था कहाँ हुआ था पहले तो उसके पति को छुड़वाया होगा ! कहते है आसमान में जाकर ब्रह्माजी पुरोहित बने

Scanned with CamScanner

और वहाँ राधा कृष्ण का ब्याह हुआ अभी विज्ञानके युग में ये सब कोई मानेगा, यदि मान भी जायें राकेट आदि से गए होंगे तो पहले पति से छुड़वाया होगा, अपने आप भाग के चली गयी थी या भगाकर ले गये होगें, कोई रास्ता तो समझमें आए यहां से आसमान मे कैसे गए और वहाँ जाकर दूसरे की घरवाली से शादी कैसे कर ली स्वामी दयानन्द ने हिन्दुओं को सम्बोधित करके कहा "जो कृष्ण जन्म से लेकर मरण तक कोई दुष्कर्म नही किया उसका इतना अपमान! बुरा हो भागवत लिखने वाले का जिसने इतने सच्चरित्र व्यक्तिको गन्दा किया" । आज के इस पवित्र समय में जब हम कृष्ण का जन्म दिवस मनाने जाग रहे है । हमारा प्रयत्न होना चाहिये कि हम महाभारत का अध्ययन करें घर-घर के अन्दर महाभारत का जो पात्र कृष्ण था उसको इतनी फुरसत थी कि वह यह बेकार का काम करता फिरता । आप तुलना कीजिए इसको महाभारत के कृष्ण से और पुराणों के कृष्ण से, अगर ये चीजें हमारे घरों के भीतर चली जाए तो कितना बड़ा उसका परिणाम है साहब आप यह मत समझिए इससे कुछ भी नहीं हुआ है । आप जाइए वृंदावन में मै साढ़े तीन सौ स्थान घूमा हुआ हूँ क्षमा कीजियेगा कोई भी चीज स्थान ऐसा नही है जहाँ व्यभिचार के अड्डे न हों मै आपसे कहने जा रहा हूँ कि इस भक्ति का भयंकर परिणाम निकला है कृष्ण ने जिस गीता का उपदेश करके अर्जुन को जो व्याहमोह में आकर के हथियार रख दिए थे जिसने और शुरूआत यही से तो होती है **सेनयोरूभयो र्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत!** अर्जुन कहते है कि मेरे रथ को दोनों सेनाओं के मध्य मे खड़ा कर दो मैं देखूं तो सही किन किन से मुझको लड़ना है और उन्होंने दोनो सेनाओं के मध्य में रथ को खड़ा

कर दिया तब उसने खड़े होकर दोनों तरफ देखा सब अपने रिस्तेदार खड़े हुए है और देखकर के दादा भीष्म है जिनकी गोद में मै खेला हूँ, द्रोणाचार्य गुरु है जिनके चरण पूज्य है, कृपाचार्य खड़े हैं कहीं समझिये अपने भतीजे खड़े हैं, कहीं मामा खड़ा है, तो कहीं ताऊ देख करके व्याह मोह मे आ गया और कहा कि

सीदन्ति ममगात्राणि मुखं च परिशुष्यति ।
वेपथुश्च शरीरे मे रोम हर्ष श्चजायते ।।१/२९

चरित्र

हे कृष्ण स्वजनों को देखकर मेरे अंगशिथिल हो रहे है मुख सूखा जारहा हे मेरा शरीर काँप रहा है रोमांचित हो रहा है । **नयोत्स्यसि गोविन्द एवमुक्त्वा तूष्णीं बभूवह** ।। मैं नही लडूंगा महाराज अपने हथियार नीचे रखकर चुप चाप खड़ा हो गया तब योगीराज कृष्ण ने उस नामर्द और कायर बने हुए अर्जुन को जिस गीता के उपदेश के द्वारा उसमें मर्दानगी, तेजस्विता और वर्चस्विता भरदी और युद्ध के लिए पुनः तैयार कर दिया उस गीता का अध्ययन कोई करता है। वही करेंगे राधे श्याम,राधे कृष्ण आज रात को बारह बजे जन्म होगा पालने में झूलाते रहेंगे! यही काम कृष्ण का था क्या?

**महाराजने कहा**

तमुवाच हृषिकेश प्रहसन्निव भारत।
कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्य जुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ।। गीता २/२
क्लैब्यं मास्मगमः पार्थ नैतत्त्वमुपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्तवोत्तिष्ठ परंतप ।। गीता २/३

इस विषम परिस्थिति में यह कुविचार कहाँ से आया? यह आर्यो के योग्य कार्य नहीं है । अनार्यो का काम है सुख से वंचित करने वाला है, तेरी बदनामी भी होगी पृथा के उदर से उत्पन्न पार्थ तेरी मां तो

Scanned with CamScanner

बहुत बहादूर है तू इतना कायर कैसे हो गया ? नपुंसक मत बन यह हृदय की क्षुद्रता को छोड़ दे अन्त में एक वक्त वो आया जो हथियार रख के कहता था मेरा शरीर काँप रहा है मेरे हाथ से गांडीव छूटा जा रहा है मैं नही लड़ूंगा वहीं अर्जुन अन्त में कहता है हे कृष्ण तुम्हारी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है । मैने स्मृति प्राप्त कर ली है अब मै संशय रहित हूँ अतः आप जो कहेंगे वह मैं करूंगा । **करिष्ये वचनं तव नष्टे मोह स्मृति लबध्वा** आप जानतें है कि माफ कीजियेगा पीछे सारे महाभारत को अगर कृष्ण पांडवों के पक्ष में नही होता तो पांडव जीत नही सकते थे इतना बडा राजनीतिज्ञ (पोलिटिशियन) और इस युग में होगा नही किस तरीके से सारे महाभारत और महाभारत की लडाई कोई यूंही लड़ाई नहीं थी कितना बड़ा मिशन लेकर चला है । आप जरा अंदाजा तो कीजिए मिशन क्या था? महाभारत! एक यह देश बद्दकिस्मती से जैसी फूट आजकल है छोटी छोटी स्टेट आपस में लड रही है गोदावरी के पानी के लिए लड लो, गंगा के पानी के लिए लड लो, फरक्का पर लड लो ये जो सीमाऐं बांध रखी है पहले छोटी छोटी स्टेट्स थी उनमें डिवाइड था ये देश आज से ५००० साल पहले भी यह देश डिवाइड हो चुका था छोटे - छोटे रजवाड़े थे जिसकी शक्ति ज्यादा है वह दूसरे को जीत लेता था। मगध के राजा जरासंध व शिशुपाल ने न जाने कितने राजाओं को अपने अधीन करके कैद खाने में डाल रखा था रोजाना संर्घष ही संघर्ष होता था कोई केंद्रीय शक्ति नही थी सारा देश बिखरा पड़ा हुआ था कृष्ण के सामने एक ही मकसद था कि किसी तरीके से कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी और पूर्वी समुद्र से पश्चिम समुद्र तक के देश को एक सेंटर पावर के कब्जे में ले आऊँ एक महान

Scanned with CamScanner

भारत का निर्माण करना जो विभाजित भारत है उसको एक महान भारत के रुप मे क्रियेट करना ये कृष्ण का उद्ददेश था सारी लडाई इसीके लिए लडी गई, कहीं जरासंध को मार रहे हैं तो कहीं शिशुपाल को मार रहे हैं कहीं उनको जीतने जा रहे हैं वृन्दावन से भागकर द्वारका पुरी में आ कर के दक्षिण के लोगों को तैयार करना, उत्तर भारत से आकर के ये मामूली काम नहीं है और महाभारत का युद्ध इस उद्देश्य से किया गया था आसुरी शक्तियाँ समाप्त हो जाय और एक सेन्टर पावर बन जाए जो एक तंत्र हो तो ऐसा कृष्ण को कहाँ वक्त था जो आवारागर्दी के काम करता फिरता यहाँ तलक कि एक आश्चर्य जनक बात है जो आपको कहीं नहीं मिलेगी महाभारत में ही मिलेगी और वो यह है । जब लडाई समाप्त हो गई और शादी को भी वर्षों गुजर गए रुक्मणी के साथ उसी का नाम सत्यभामा था एक दिन जब फुरसत में बैठे हुए थे पतिपत्नी तो पत्नी जो रुकमणि है उसने (इनडायरेक्ट्ली) एक प्रश्न किया महाभारत में आता है उसने पूछा कि नाथ! आर्य लोग विवाह क्यो करते हैं ? कृष्ण बड़े विचित्र हालत में पड़ गए और कहने लगे कि वंश वृद्धि के लिए करते है सन्तान उत्पति हो और वंश आगे चले पत्नी सकुचा के कहने लगी कि हमारी शादी को कितने वर्ष हो गए ? कृष्ण गिन गिना के बोले कि बहुत वर्ष हो गए पत्नी ने कहा कि तो फिर कृष्ण समझ गए कहा हमें मौका ही नहीं मिला अपनी जिम्मेदारियों में इतने व्यस्त रहे दुनिया भर की परेशानियों की वजह से ख्याल ही नहीं रहा कि यह भी एक कर्तव्य है कि एक सन्तान पैदा की जाए रुकमणी ने कहा तब! कृष्ण कहते है कि तब का जवाब यह है कि संन्तान वह अच्छी होती है जो अपने से भी काबिल हो, अगर अपने से दुर्बल और

Scanned with CamScanner

कमजोर संतान हुई तो किस काम की, सन्तान तो जानवरों को भी होती है सुपुत्र वो है जो अपने बाप से भी चार कदम आगे निकले, रुक्मणी बड़ी परेशान फिर! देखो इस महल में रहते हुए एशोआराम की दुनिया में रहते हुए अच्छी सन्तान पैदा नहीं कर सकते अच्छा हो हम और तुम यहां से निकलें और पहाड़ पर चलें एकान्त सेवन करें संयम के साथ जीवन व्यतीत करें जैसे ब्राह्मण लोग ऋषि-मुनि लोग करते हैं तब उस संयम के बाद एक सन्तान पैदा करें । महाभारत में लिखा है कि दोनों बारह साल के लिए हिमालय में चले गए जिसको आज बद्रिकाश्रम (बद्रीनारायण) कहते है वहाँ जाकर के जंगल के बेरों को खा कर १२ वर्ष संयम के साथ जीवन व्यतीत किया तब एक संतान प्रद्युम्न पैदा हुई, क्योंजी? ये इतना संमयी आदमी महाभारत में से निकल कर पुराणों में आकर कहाँ फंस गया कभी सोचा! इतने संयमी आदमी जो विवाह के बाद अपनी पत्नी तक के साथ भी संम्पर्क स्थापित नहीं कर सका जो कठोर तपस्या करने बद्रीका आश्रम जाता है, वो व्यक्ति पुराणों का कृष्ण कैसे हो सकता है? जब हमने शास्त्रार्थ के लिए माध्वचार्य को बोला तो वहाँ से दो जवाब मिले है वह भी आपको बता दूं । कहने लगे कि साहब ये कृष्ण कोई और था कृष्ण का रूप धारण कर के कृष्ण को बदनाम करता फिरता था मैने माध्वाचर्य को कहा कि घरों में जो मक्कार कृष्ण की, जो था ही नही उसकी तसवीरें तो उतरवा दो या उसकी कथाएँ तो बन्द करादो, राधा का नाम लेना तो बन्द कर दो, तो कहा कि राधा तो कोई हुई नहीं राधा तो रातका नाम है और कृष्ण पता नही किसका नाम बताया उन्होंने "क्यों" पुस्तक में एक्सप्लेन किया है । रुड़की में फिर मुझे मिले तो उन्होंने कहा

आपने मेरी पुस्तक पढ़ी "क्यों" मैने आर्य समाजियों को मुहुँतोड जवाब दे दिया है । मैंने कहा पढ़ लिया है सरकार, आपने जो लिखा है उसके गुरु भी दयानन्द है कहने लगे वो कैसे ? मैने कहा तुम रोज अहल्या की कथा सुनाते थे कि रामचंद्र जी ने पत्थर की शिला को पैर लगाया और जिन्दा हो गई स्वामीजी ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में इसका अर्थ वैज्ञानिक किया है उन्होनें तो अहल्या की कथा का अर्थ किया था तुमने तो राधा कृष्ण को ही खतम कर दिया इतनी काल्पनिक उसकी क्या व्याख्या की है । मैनें कहा कि तो कृष्ण कोई ऐतिहासिक नायक हीरो नही हुआ राधा के दूसरे अर्थ कृष्ण के दूसरे अर्थ अब जब चारों तरफ से फंस गए शास्त्रार्य में तो कोई न कोई जवाब दें बचने को जवाब एसे बना के दिये जिससे कृष्ण की सत्ता ही समाप्त हो जाती है ।

अगर पाश्चात्य लोग कहते है कि कृष्ण कोई नही हुआ, राम कोई नही हुआ तो आश्चर्य की क्या बात है जब तुम ही ऐसी बात लिख देते हो कल्पना से अपनी उड़ान भरकर के तब क्या किया जाए तो आज इस जन्माष्टमी के पर्व पर में आपसे प्रार्थना करुंगा कि कृष्ण के बारे में जो आर्य समाज का दृष्टिकोण था वह मैने बहुत स्पष्ट और साफ रखा हो सकता है इसमे मुझे थोड़ा कठोर बोलना पड़ा हो मैने बहुत अध्ययन किया हुआ है मुझे आप क्षमा करेंगे और में समझ गया हू कि जबतक सामाजिक जीवन के अन्दर से ये बुराइयाँ जो भक्ति और उपासना का स्थान ले चुकी है । इनका स्पष्टीकरण नही किया जायेगा तब तक कौम को सुधारा नहीं जा सकता तब तक ये जाति उन्नति नही कर सकती अब देखिये इस कृष्ण की भक्ति, गीता का उपदेश सुन के तो अर्जुन ने गाण्डीव उठा लिया था अठ्ठारह

Scanned with CamScanner

अक्षोहिणी सेना कुरुक्षेत्र मे तबाह करदी यतो धर्मस्ततो जयः का नारा लग गया और इस (पुराण वाले) कृष्ण की भक्ति का परिणाम क्या होगा मै रांची रहता था वहाँ एक पेशकार साहब रहते थे जज साहब की अब बात बताने में कोई हर्ज नही हैं बहुत पुरानी बात हो गयी सन १९३८ या १९४२ की बात होगी उनके खानदान की कोई लड़की अगवा कर दी गयी थी उसको गिरफ्तार कराने के लिए वारन्ट निकाला उस सिलसिले में मुझे वहाँ जाना पडा ते मैने मकान पर जाकर आवाज लगाई रात का वक्त था दफ्तर के काम काज निपटा कर गया मैं वहाँ ईसाई मिशन के मुकाबले मे काम करता था आर्य समाज हिन्दूमिशन का इन्चार्ज था बिहार ब्रांच का, मैनें आवाज लगाई वो तो थे नहीं । नौकरानी जिसको वहाँ दायी बोलते हैं दायी निकलकर आई और कहा कि यहाँ नही है वो, मैने कहा, कहाँ है? वो चौराये पर रास हो रही है वहाँ है। तो मै वहाँ चला गया मै चारोंतरफ देखूं वहाँ हो क्या रहा था वहाँ मैने देखा एक औरत ओढ़नी ओढ़े हुए डंडे लिए थे सर्कल में घूमते हुए एक दूसरे के डंडे को डंडा मार रहे थे मै उन्हे ढूंढूं लक्ष्मीबाबू नाम था उनका मैने चारों तरफ चक्कर काट लिया नही मिले साहब फिर लौट आया मैने फिर आवाज लगायी मैने कहा वहां तो नही मिले कहाँ है? वे दायी मुझे हँस कर कहती है वहाँ की भाषा में जो लाल रंग का घाघरा और हरे रंग की ओढनी ओढे हुए है वही तो हैं वो, मै फिर लौट कर आया क्यों कि सर्कल में धूम रहे थे तो मुझे भी निशाना लगाना पडा मेरे सामने आगए । मुझे तो घर वाली ने भी उस तरह से नही देखा जिस तरह से उसने मुझे देखा मगर मुश्किल यें कि मूंछ बाहर निकलकर आ गयी अब इस भक्ति का ये परिणाम कि किशन जी की मूर्ति के चारों

Scanned with CamScanner

तरफ स्त्री की वेश भूषा मे रास लीला रच रही है । ये ही नही आप सुन कर हैरान हो जाएगे मुझे बाद में पत्ता चला कि लक्ष्मी बाबू है वो कृष्ण के इतने भक्त है कि वे चूडिया पहनते है नाक में नथ कान में कुंडल डाल देंगे साडी पहन लेंगे औरभाई साहब जो कृष्ण की मूर्ति है उसे लेकर बिस्तर में सोएंगे गर्मी होगी तो कहेंगे गर्मी लगरही थोडा हट के सोइये ना और सर्दी होगी तो कहेंगे हम को सर्दी लगरही है । चिपट के सोइए ना और उस मूर्ति को बदन से चिपका के सोएंगे ऐसे एक लक्ष्मी बाबू नहीं है मुझे माफ कीजियेगा आप वृन्दावन में चले जाइये एक नया सम्प्रदाय खड़ा हो गया है "सखी सम्पदाय" वो चुडीयाँ पहनते है, साडियाँ पहनते है, सफेद रंग की और गली मे मिलेंगे मथुरा वृन्दावन में आप मेरे साथ चलिये खर्चा तुम्हारा होगा मिल गए तो तुम्हारा और नमिले तो हमारा, मेरे साथ चलो मै अभी दिखाता हूँ सखी सम्प्रदाय के लोग सेंकड़ों फिर रहे है और उनके नाम भी डबल डबल है मुझे तब पता चला जब मै रेल में सफर कर रहा था एक दाडी मूँछ वाले बाबा मेरे पास बैठेहुए बाबा मतलब लाल कपड़ों में नही सफेद कपड़ों में थे और किताब पढ़ रहे थे मैं उनसे पुस्तक लेकर देखने लगा तो एकतो तस्वीर उन्ही जनाब की और एक कोई और की और उसके नीचे दो नाम लिखे हुए एक नाम तो उनका असली था मान लीजिये प्रेमसिंह और नीचे लिखा था प्रेम लतादेवी एक निरंजन सिंह उसके नीचे सुहाग लतादेवी, अब मैने सोचा की डबलनाम क्यों छप गए फ्रूफ की गलती होगी लेकिन जब तसवीर देखी तो उन्ही जनाब की वो जो मेरे पास बैठें थे कभी उनका चहरा देखूं कभी तस्वीर मैने कहा कि आपकी ही तस्वीर है न उन्होंने कहा हाँ मेरी ही है तो मैने कहा ये डबल नाम क्यों लिखे हुए हैं । कहने

Scanned with CamScanner

लगे कि बात यह है जी कि हम 'सखी सम्प्रदाय' के है । मैने कहा कि डबल नाम से क्या मतलब! तो उन्होने कहा कि हमारा शरीर तो मर्दना (पुरुषका) है और आत्मा हमारी जनानी (स्त्रीकी) है तो हो गयी प्रेमलता देवी और सुहाग लतादेवी अब ये फौज चीन की लड़ाई में भेजोगे या पकिस्तान की लडाई मे इनसे काम चलेगा या अर्जुन तैयार करना है गीता का घर घर में प्रचार करकर के ये कौम को सोचना पडेगा आज इतने हजार वर्षो के बाद में कौन सा कृष्ण हमारे जीवन का आदर्श हो सकता है जो इतिहास का लाभ उठा सकती हो तीव्रगति के लिए कहीं हम उससें वंचित तो नही हो रहे है और बल्कि हानि तो नही उठा रहे हैं इस लिए अपने कदम सोच समझकर उठाने होगे तथा ऋषिदयानन्द व आर्य समाज के दृष्टिकोण को समझना होगा और मैने पहले ही कह दिया हैं कि डाक्टर जब इन्जेक्सन लगाता है तो सिसकारी तो निकलती है उसका इरादा बीमारी का इलाज करना होता है हमने अगर कोई कठोर शब्द बोला हो तो उससे नाराज मत होना उसके लिए माफी चाहता हूँ उन कठोर शब्दो के लिए, शब्द वापिस लेने को तैयार नही हूँ क्योकि जो कुछ भी कहाहै सच ही कहा है ।

इति ओम्

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई

आचार्य धर्मवीर आर्य

सम्पर्क - 9029421718

Scanned with CamScanner